विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत विषयशिक्षक श्यामउदय सिंह

ता: 06-05-2021 (एन.सी.ई.आर.टी. पर आधारित)

पाठ : द्वितीय: पाठनाम् बुद्धिर्बलवती सदा

- **जम्बुक**:-स्वामिन् यत्रास्ते सा धूर्ता तत्र गम्यताम् ।व्याघ्र !तव पुन: तत्र गतस्य सा सम्मुखमपीक्षते यदि ,तर्हि त्वया अहम् हन्तव्य: इति ।
- **व्याघ्र**:-शृगाल! यदि त्वम् मां मुक्त्वा यासि तदा वेलाप्यवेला स्यात् ।
- **शब्दार्थ**-

  धूर्ता –धूर्त स्त्री ,गम्यताम् –जाना चाहिए

  आस्ते –है, सम्मुखम् –सामने

  ईक्षते –दिखाई देता है , हन्तव्य: - मारना चाहिए

  गतस्य –गए हुए के , मुक्त्वा - छोड़कर

  वेला –शर्त , स्यात् -होनी चाहिए
- **अर्थ**

  सियार –स्वामी !जहाँ वह धूर्त औरत है ,वहाँ जाना चाहिए ।हे बाघ! तुम्हारे फिर से वहाँ जाने पर यदि वह देखेगी ,तो तुम मुझे मार देना ।

  बाघ - सियार!यदि तुम मुझे छोड़कर जाओगे ,तो शर्त भी बिना शर्त वाली (समाप्त) हो जाएगी ।